प्रयागराज, सोमवार
6 जनवरी, 2025
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 24

दैनिक जागरण

www.jagran.com

उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

# छह महीने बाद मिला परिवार तो छलक उठी आंखें

जागरण संवाददाता, प्रयागराज : मऊ जिले के रहने वाले 45 वर्षीय हरेंद्र यादव महीनों से सड़क पर बेसहारा जीवन बिता रहे थे। पत्नी और भतीजे उन्हें ढूंढते रहे जबकि मुंबई के एक गैर सरकारी संगठन के सदस्यों के हाथ लगे हरेंद्र को स्वरूपरानी नेहरू 'एसआरएन' चिकित्सालय पहुंचा दिया गया। मानसिक रोग विभाग में डाक्टरों ने इलाज किया तो हालत में सुधार हुआ। फिर घर का पता मिला और एक दिन हरेंद्र को अपना परिवार भी मिल गया। यह संभव हो सका एसआरएन के डाक्टरों और संस्था की संयुक्त पहल से। ऐसे लोगों का इलाज कर उनके घर पहुंचाने की अस्पताल में पहल शुरू हुई है, जो बेघर हैं और परिवार से बिछड़ गए हैं।

मऊ जिले में परिवार से मिले हरेंद्र यादव (पीली टीशर्ट में), साथ में उन्हें घर पहुंचाने वाले संस्था के सदस्य • सौजन्य, मानसिक रोग विभागाध्यक्ष

कालेज की कार्यकारी प्राचार्य डा. वत्सला मिश्रा के निर्देशन में मानसिक रोग विभाग ने नई राह पर कदम रखा है। इससे उन उपेक्षित लोगों के लिए एक उम्मीद जगी है, जिन्हें अक्सर भुला दिया जाता है। उद्देश्य है कि बेसहारा लोगों को समाज की मुख्य धारा में लाते हुए परिवार से मिलाया भी जाए।

– डा. वीके सिंह, विभागाध्यक्ष

मुंबई के गैर सरकारी संगठन श्रद्धा पुनर्वास फाउंडेशन 'एसआरएफ' ने एसआरएन के मानसिक रोग विभाग के साथ लिखित समझौता किया है। इसमें संस्था ऐसे लोगों को ढूंढकर लाती है जो परिवार से बिछड़ कर बेसहारा जीवन बिता रहे हैं। अस्पताल में डाक्टर ऐसे लोगों का इलाज करते हैं फिर स्वस्थ हुए लोगों को संस्था उनके घर पहुंचाती है। अब तक दो लोगों को राहत पहुंचाई जा चुकी है। इलाज और पुनर्वास की शुरुआत हरेंद्र यादव से हुई। एसआरएफ की टीम ने 19 दिसंबर को अस्पताल में भर्ती कराया था। इलाज से हालत सुधरी तो 29 दिसंबर को छुट्टी दी गई। फिर संस्था के सदस्यों मोहम्मद शादाब और डा. उदय सिंह ने घर का पता लगाकर हरेंद्र को परिवार से मिलाया। एक अन्य व्यक्ति के घर के पते की जानकारी न होने पर संस्था ने उसे महाराष्ट्र के अपने मुख्यालय में शरण दी है।

**अस्पताल से फोन आने पर घर लौटी खुशियां :** हरेंद्र की पत्नी सुनीता यादव ने फोन पर दैनिक जागरण को बताया कि पति मिल गए, इससे बढ़कर खुशी क्या हो सकती है। छह महीने से ढूंढ रही थीं, पति कहीं लापता हो गए थे। एक बेटा और दो बेटियां हैं।